अमर उजाला

नई दिल्ली । बुधवार, 12 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

जब भी किसी से मिलने जाओ तो मुस्कराते हुए मिलो। मुस्कराना प्यार की शुरुआत है।
- मदर टेरेसा

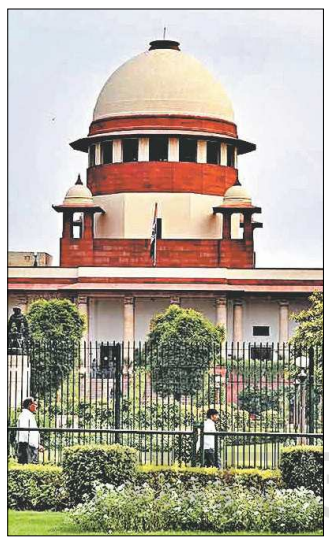

सर्वोच्च अदालत ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री से संबंधित एक ट्वीट के कारण गिरफ्तार किए गए पत्रकार की जमानत पर रिहाई के आदेश दिए हैं और स्पष्ट किया है कि संविधान के तहत मिले मौलिक अधिकारों के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता।

नागरिक स्वतंत्रता और सीमाएं

सर्वोच्च अदालत की एक पीठ ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से संबंधित एक ट्वीट की वजह से गिरफ्तार किए गए पत्रकार प्रशांत कनौजिया की जमानत पर तुरंत रिहाई का आदेश देकर स्पष्ट किया है कि संविधान में मौलिक अधिकारों के तहत दी गई व्यक्तिगत स्वतंत्रता का राज्य उल्लंघन नहीं कर सकता। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया है कि उसका यह आदेश पत्रकार द्वारा किए गए ट्वीट की पुष्टि नहीं है, बल्कि उसके खिलाफ कानून के मुताबिक कार्रवाई हो। दरअसल कनौजिया को उत्तर प्रदेश की पुलिस ने दिल्ली से उनके घर से जिस तरह से गिरफ्तार किया था, उससे उसकी नीयत पर सवाल उठ रहे थे। यह मामला एक महिला के वीडियो से संबंधित है, जिसमें कथित तौर पर वह योगी आदित्यनाथ को शादी का प्रस्ताव भेजने का दावा कर रही है। इस मामले में पुलिस ने एक टीवी चैनल के दो पत्रकारों सहित कुछ और लोगों को भी गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी के समय सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय निर्देशों का पालन नहीं करने का यह कोई पहला मामला नहीं है, लेकिन कनौजिया को जिस आरोप में गिरफ्तार किया गया और उनके खिलाफ जिस तरह की धाराएं लगाई गईं, वह राज्य की ताकत के अतिशय दुरुपयोग को ही रेखांकित करता है। सरकारें और राजनेता एक ओर तो संविधान की दुहाई देते नहीं थकते, लेकिन दूसरी ओर नागरिक आजादी को खुद की प्रतिष्ठा से जोड़ने लगते हैं। कर्नाटक पुलिस ने तो मुख्यमंत्री कुमारस्वामी के बेटे के लोकसभा चुनाव में पराजित होने से संबंधित एक खबर प्रकाशित करने पर एक कन्नड़ अखबार के संपादक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। कुमारस्वामी कथित गैरजिम्मेदाराना रिपोर्टिंग को रोकने के लिए कड़ा कानून लाए जाने की बात कर ही चुके हैं। पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने कुछ वर्ष पहले मुख्यमंत्री का कार्टून सोशल मीडिया में साझा करने वाले एक प्रोफेसर को गिरफ्तार किया ही था। वास्तव में अब समय आ गया है, जब आपराधिक अवमानना से संबंधित अंग्रेजों के जमाने के कानून पर फिर से विचार किया जाए। इस संदर्भ में सर्वोच्च अदालत की इस टिप्पणी पर गौर किया जाना चाहिए, 'संविधान के अनुच्छेद 19 (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता) और अनुच्छेद 21 (जीने का अधिकार और स्वतंत्रता) के तहत मिले मौलिक अधिकारों से कोई समझौता नहीं हो सकता।' कहने की जरूरत नहीं एक परिपक्व लोकतंत्र में राज्य सत्ता के दुरुपयोग की कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

हिमाचल का सेब चाहिए या अमेरिका का?

खाद्य पदार्थों का उत्पादन, प्रसंस्करण और पैकेजिंग अलग-अलग देशों में होने के कारण उत्पादों को ढोने वाले जहाजों और विमानों से काफी कार्बन उत्सर्जन होता है, जो पर्यावरण के लिए खतरनाक है और लागत भी बढ़ती है।

देविंदर शर्मा, कृषि नीति विशेषज्ञ

यह कितना दिलचस्प है कि एक देश, जो इन वर्षों में दालों का प्रमुख आयातक रहा है, वह दालों का निर्यातक भी रहा है! दालों का निर्यात वास्तव में नवंबर, 2018 से बढ़ा है, जब सरकार ने दशकों से लागू कुछ नियंत्रण में ढील दी है। जहां दालों का आयात वर्ष 2018-2019 में 25 लाख टन तक गिर गया है, जो दो साल पहले 66 लाख टन के उच्च स्तर पर था, वहीं निर्यात 2018-19 में पांच लाख टन तक बढ़ गया है। केंद्र ने बंगाल के चना निर्यात के लिए सात फीसदी प्रोत्साहन की भी घोषणा की है।

दुनिया भर के देशों में खाद्य व्यापार में एक ही उत्पाद का आयात और निर्यात, दोनों हो रहा है। भारत कोई अपवाद नहीं है। ब्रिटेन स्थित लोकल फ्यूचर समूह के अनुसार, कैलिफोर्निया उतने ही बादाम का आयात करता है, जितना निर्यात करता है। वर्ष 2007 में ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया ने 20 टन बोतलबंद पानी का कारोबार किया। इस अनावश्यक आयात-निर्यात का मौसमी खाद्य की कमी से कोई लेना-देना नहीं होता है, लेकिन ऐसा किया जाता है, क्योंकि इससे कृषि व्यवसाय करने वाली बड़ी कंपनियों को मुनाफा कमाने में मदद मिलती है।

सबसे बुरी बात यह है कि गैर सरकारी संगठन लोकल फ्यूचर्स के अनुसार, माल ढोने वाले हजारों जहाजों और दुनिया भर का चक्कर लगाने वाले विमानों द्वारा उत्सर्जित कार्बन को पेरिस जलवायु संधि में शामिल नहीं किया गया है। वर्ष 2012 में व्यावसायिक जहाजों द्वारा दस लाख टन से भी ज्यादा कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन किया गया, जो ब्राजील या कनाडा के उत्सर्जन से ज्यादा है।

मुझे याद है कि कुछ साल पहले वर्ष 1994 में मैंने ब्रिटेन स्थित सस्टेन द्वारा तैयार एक उत्कृष्ट रिपोर्ट फूड माइल्स पढ़ी थी। इसमें महाद्वीपों में भेजे गए खाद्य पदार्थों के खतरे के बारे में बताया गया था, जिसमें कहा गया था कि खाद्य पदार्थों का प्रसंस्करण और पैकेजिंग कहीं और होती है, तथा उसे फिर उसी देश को भेजा जाता है, जहां से इसकी शुरुआत हुई थी। आपकी थाली में पहुंचने से पहले खाद्य पदार्थ औसतन 3,000 मील की दूरी तय करता है। यह अपने आप में एक ऐसा चौंकाने वाला रहस्योद्घाटन था, जिस पर उपभोक्ताओं और नीति निर्माताओं को पुनर्विचार करना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उस रिपोर्ट को अद्यतन करके फिर से प्रकाशित किया गया है, अब भी गंभीरता से उस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। सुपरमार्केट खाद्य पदार्थों का दुनिया भर में व्यवसाय करने में अग्रगण्य हैं। वे न केवल सस्ते प्रसंस्करण का लाभ उठाते हैं, बल्कि बड़े पैमाने पर तेल सब्सिडी का भी फायदा उठाते हैं और इस प्रक्रिया में होने वाले कार्बन उत्सर्जन से अनभिज्ञ बने रहते हैं। वैश्विक जीवाश्म तेल सब्सिडी प्रति वर्ष पचास खरब डॉलर को पार कर जाता है, जो व्यवसाय करने वाली इन कंपनियों को दुनिया भर में सस्ते खाद्य आपूर्ति में मदद करता है।

एक दूसरा उदाहरण लीजिए। ट्रेडक्राफ्ट कॉफी जिसे सेन्सबरी चेन अपने स्टोरों में बेचती है, वह तंजानिया के बुकोबा में उगाई जाती है। फिर कॉफी बीन्स 656 किलोमीटर की दूरी तय कर दार-एस-सलाम जाती है, जहां से इसे आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा भेजा जाता है। विजयवाड़ा दार-एस-सलाम से करीब 3,250 मील दूर है। विजयवाड़ा में कॉफी बीन्स को पैक किया जाता है। इसे फिर ब्रिटेन के साउथम्टन भेजा जाता है, जो करीब 5000 मील दूर है। साउथम्प्टन से यह लीड्स जाता है, जहां से इसे दुनिया भर के सेन्सबरी स्टोर्स में पुनः भेजा जाता है। मुझे यकीन है कि एक बार जब भारत में रिटेल में एफडीआई के लिए मंजूरी मिल जाएगी, तो सेन्सबरी को लीड्स से नई दिल्ली पैक कॉफी जहाज से भेजने में सुविधा होगी। मेरी समझ में कभी यह नहीं आया कि न्यूजीलैंड, चिली, फिजी से भारत में सेब को आयात करने की अनुमति क्यों दी गई, जबकि यहां हिमाचल प्रदेश और कश्मीर के सेब खरीदने वाला कोई नहीं है। इस समय भारत में 44 देशों से सेब का आयात होता है।

कुछ दशक पहले मैंने लिखा था कि कैसे पेप्सी इस्तेमाल की गई पीईटी बोतलों को, जिसका उपयोग शीतल पेय पैकिंग के लिए होता है, भारत के चेन्नई में रीसाइक्लिंग के लिए भेजती है। इन बोतलों को फिर से उपयोग के लिए अमेरिका भेज दिया जाएगा। बोतलों की रिसाइक्लिंग के लिए पेप्सी इसलिए इतने चक्कर लगाती है, क्योंकि प्लास्टिक कचरे की रिसाइक्लिंग की अनुमति अमेरिका में स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय कारणों से आसानी से नहीं मिलती है। इसको लेकर वहां बहुत सख्त कानून है, इससे लागत भी बढ़ती है। हाल ही में मुझे तब खुशी हुई, जब चीन ने 28 तरह के प्लास्टिक कचरों के आयात पर रोक लगा दी। भारत ने भी प्लास्टिक कचरे के आयात पर रोक लगाई है। यह तब हुआ, जब चीन द्वारा प्रतिबंध लगाने के बाद कचरा निर्यातकों की भारत में बाढ़ आ गई, और भारत ने जहरीले और गंदे कचरे के आयात पर रोक लगाने की जरूरत महसूस की।

क्या अब वह समय नहीं आ गया है कि हम अपनी अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीति पर पुनर्विचार करें? मैं लंबे समय से कह रहा हूं कि विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) और जलवायु वार्ताकार वास्तव में विपरीत उद्देशों के लिए काम कर रहे हैं। डब्ल्यूटीओ ऐसे व्यापार पर और जोर डाल रहा है, जबकि इससे होने वाले कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग पर पड़ने वाले असर पर उसका ध्यान नहीं है।

इसी तरह जलवायु वार्ताकार जलवायु नियंत्रक मानकों के रूप में ऐसे अवांछित व्यापार पर प्रतिबंध लगाने की बात नहीं करते हैं। इसका एक मात्र उपाय है कि दुनिया भर में खाद्य पदार्थों की पागल दौड़ के बजाय स्थानीय बाजारों को लोकप्रिय बनाया जाए। इसमें उपभोक्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। उन उत्पादों के लालच से बचने की कोशिश करें, जो दूर कहीं प्रसंस्कृत होने का दावा करते हैं, जो आपके पड़ोस में उगाया जाता है। चिली या अमेरिका से प्रसंस्कृत नारंगी का जूस पीने के लिए क्यों जाएं, जब आपके स्थानीय बाजार में ताजा और स्वादिष्ट जूस उपलब्ध है? इस तरह का समझदार विकल्प अपनाने से आप कार्बन उत्सर्जन कम करने में छोटा ही सही, लेकिन प्रभावी भूमिका निभाएंगे।

अंतर्ध्वनि

>> हाना आरेन्ट

विचारहीनता व बुराई के बीच अजीब तरह की परस्पर निर्भरता है

***पूर्णतावादी** शासन का आदर्श विषय वे लोग हैं, जिनके लिए तथ्य और कल्पना; सच और झूठ के बीच भेद खत्म हो गया है। जब बुराई को अच्छाई के साथ प्रतिस्पर्धा करने दी जाती है, तो बुराई में भावात्मक जनवादी गुहार होती है, जो तब तक जीतती रहती है, जब तक कि अच्छे पुरुष और स्त्रियां दुर्व्यवहार के खिलाफ एक अग्रणी-दल के रूप में खड़े न हो जाएं। राजनीतिक रूप से, तर्क की कमजोरी हमेशा से यह रही है कि जो लोग कम बुराई को चुनते हैं, वे बहुत जल्द भूल जाते हैं कि उन्होंने बुराई को चुना है। यह दुखद सच्चाई है कि सबसे ज्यादा बुराई उन लोगों द्वारा की जाती है, जो कभी भी अच्छे या बुरे होने का मन नहीं बना पाते हैं। मैं इस नियम का पालन करती हूं : सबसे खराब के लिए तैयार रहो, सबसे अच्छे की उम्मीद रखो; और जो होता है, उसे स्वीकार कर लो। जब आप विदेश में होते हैं, तो जीवन को प्यार करना आसान होता है, जहां आपको कोई नहीं जानता और आपके जीवन पर सिर्फ आपका नियंत्रण होता है। कोई विचार खतरनाक नहीं है, सोचना खुद में ही खतरनाक है। विचारहीनता और बुराई के बीच अजीब तरह की परस्पर निर्भरता है। एकपक्षीय शिक्षा का उद्देश्य कभी भी धारणा को मन में बिठा देना नहीं, बल्कि किसी भी प्रकार की धारणा बनाने की क्षमता को नष्ट कर देना रहा है। रूढ़ोक्तियों, सामान्य वाक्यांशों, अभिव्यक्ति और आचरण के पारंपरिक, मानसिक संकेतों के अनुपालन को वास्तविकता से बचाने के लिए हमें सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त है। क्षमा कार्य और आजादी की कुंजी है। आजकल भले मानव का अस्तित्व केवल समाज के सीमांत पर ही संभव है, जहां आदमी को भूखे मरने या मौत तक पत्थरबाजी का जोखिम उठाना पड़ता है। इन परिस्थितियों में, विनोदपूर्णता बहुत मदद करती है। बुराई उदासीनता पर फलती-फूलती है और इसके बिना अस्तित्व में नहीं हो सकती है।*

-जर्मन मूल की अमेरिकी दार्शनिक

मंजिलें और भी हैं

>> डॉ. असित खन्ना

जहां पिता को इलाज नहीं मिल सका वहीं लगाया कैंप

यूं तो मैं दिल्ली का रहने वाला हूं पर मेरा जन्म नैनीताल स्थित ननिहाल में हुआ। बचपन में गर्मियों की छुट्टियां वहीं बीतती थीं, इसलिए वहां के लोगों की परेशानियों के बारे में मुझे पता भी था और उनके लिए कुछ करने की इच्छा थी। अभी मैं कौशांबी के यशोदा अस्पताल में कार्डियोलॉजिस्ट के पद पर कार्यरत हूं। वर्ष 2012 में मैं और मेरा परिवार नैनीताल घूमने के लिए गए हुए थे। हम वहां पैराग्लाइडिंग कर रहे थे कि अचानक मेरे पिता गिर गए और उनको गंभीर चोट लग गई। मैंने उन्हें संभाला और फिर हम उपचार के लिए आसपास अस्पताल खोजने लगे। घंटों इधर-उधर घूमने के बाद भी कोई अस्पताल नहीं मिला और जो मिला भी, वह बहुत ही साधारण स्तर का था। तब मुझे लगा कि अगर नैनीताल जैसे शहर का यह हाल है, तो उत्तराखंड के गांवों में लोग कैसे रहते होंगे, उनकी स्वास्थ्य जरूरतें कैसे पूरी होती होंगी! फिर वर्ष 2014 में मैंने अपने चार डॉक्टर साथियों के साथ भीमताल के पास नौकुचियाताल में पहला मेडिकल कैंप लगाया। पहले ही कैंप में लगभग एक हजार लोग आए। तीन दिन तक चले इस कैंप में मैंने चेकअप के साथ लोगों को जरूरी दवाइयां उपलब्ध करवाईं।

मुझे खुशी होती है, जब स्कूलों में बच्चे कहते हैं कि वे डॉक्टर बनकर अपने गांव में ही क्लीनिक खोलेंगे।

ज्यादा से ज्यादा डॉक्टरों और स्वयंसेवकों को जोड़ने के लिए मैंने वर्क कम प्लेजर का कॉन्सेप्ट अपनाया। इसमें मैं और मेरी टीम दिन में लोगों का मेडिकल चेकअप करते हैं, स्कूलों में जाकर जरूरतमंद बच्चों को किताब, कॉपी, बैग, जूते-चप्पल आदि बांटते हैं। इसके बाद रात में सभी लोगों के साथ टेंट लगाकर बोनफायर और गाने-बजाने का कार्यक्रम होता है। लगातार बढ़ते प्रदूषण और पर्यटकों के दबाव से पहाड़ अब अपना प्राकृतिक आकर्षण खोते जा रहे हैं। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण के लिए हमारी टीम वहां पौधारोपण करने के उद्देश्य से जुलाई माह में कैंप लगाती है। हमारी टीम जगह-जगह घूमकर पौधारोपण करती है। इसमें हम स्कूली बच्चों को शामिल करते हैं, जिन्हें ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने पर स्कूल बैग, जूते पुरस्कार के रूप में दिए जाते हैं। मानसून के मौसम में जिन जगहों पर नहीं जाया जा सकता, वहां सीड बम का उपयोग करते हैं। इस बार मैंने पैराग्लाइडिंग के माध्यम से सीड बॉम्बिंग करवाने का फैसला लिया है, ताकि दुर्गम क्षेत्रों में भी हमारी पहुंच हो सके। जैसे भी संभव हो सकता है, हम पहाड़ों की स्थिति बदलने की कोशिश कर रहे हैं। यहां पर बहुत कम ऐसे लोग मिलते हैं, जो अच्छी पढ़ाई-लिखाई करने के बाद अपने गांव वापस आकर कुछ रचनात्मक काम करना चाहते हैं। वर्ष 2017 में मैंने *होप फाउंडेशन* के जरिये शिक्षा के लिए कई अभियान शुरू किए। इसके माध्यम से जरूरतमंद छात्रों की फीस भरना, स्कूलों की सुविधाएं बढ़ाने में मदद करना, होनहार छात्रों का बाहर एडमिशन करवाना शुरू कर दिया। इस काम में मेरे परिवार, दोस्त और रिश्तेदारों ने आर्थिक रूप से सहयोग दिया। महज चार-पांच डॉक्टरों के साथ शुरू हुए इस सफर में अब 35 से ज्यादा डॉक्टर शामिल हैं। हम प्रतिवर्ष जुलाई और दिसंबर के महीने में यहां आकर मेडिकल कैंप लगाते हैं। टीम की महिला डॉक्टर अलग-अलग स्कूलों में जाकर छात्र-छात्राओं को स्वास्थ्य से जुड़े विषयों पर जागरूक भी करती हैं। हमारा उद्देश्य यहां के युवाओं को नशे जैसी बुराइयों से दूर कर बेहतर भविष्य देना है। मुझे खुशी होती है, जब स्कूलों में बच्चे कहते हैं कि वे मेरी तरह डॉक्टर बनना चाहते हैं और डॉक्टर बन कर वे अपने गांव में ही क्लीनिक खोलेंगे। मेरा प्रयास है कि इन बच्चों के सपनों को पूरा करने में हर संभव सहयोग कर सकूं।

रोजगार पैदा करने का कौशल

रोजगार संकट से निपटने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने रोजगार एवं कौशल विकास पर 10 सदस्यीय मंत्रिमंडलीय समिति का गठन किया है, जो रोजगार चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में रोजगार अवसर तथा कौशल विकास बढ़ाने के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत करेगी।

केंद्रीय सांख्यिकीय कार्यालय के श्रमबल के नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2017-18 के दौरान देश में बेरोजगारी की दर 6.1 फीसदी रही है। कई आर्थिक विश्लेषकों का कहना है कि देश में बेरोजगारी की दर 45 साल में सर्वाधिक है। ऐसे में पांच जून को रोजगार में कमी की चुनौती से निपटने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रोजगार एवं कौशल विकास पर 10 सदस्यीय मंत्रिमंडलीय समिति का गठन किया है। यह समिति देश में बढ़ती रोजगार चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में रोजगार अवसर तथा कौशल विकास बढ़ाने के लिए अहम सुझाव और कार्ययोजना प्रस्तुत करेगी।

भारत में रोजगार अवसरों पर आधारित रिपोर्टों में यह कहा जा रहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में श्रम का आधिक्य है, लेकिन कौशल की काफी कमी है। अमेरिका और जापान सहित दुनिया के कई विकसित और विकासशील देशों में मेरिट और टैलेंट के आधार पर विदेशी युवाओं के लिए रोजगार की संभावनाओं का जो नया परिदृश्य उभरकर सामने आया है, उसमें भारतीय प्रतिभाओं के लिए अच्छी संभावनाएं हैं। अब तक अमेरिका सहित कई देशों में लंबे समय से निवास करने वाले, उन निवासियों के पारिवारिक संबंधों के आधार पर तथा सस्ती मजदूरी पर काम करने वाले लोगों को नागरिकता और वीजा दिए जाने में प्राथमिकता दी जाती थी। लेकिन अब अमेरिका और जापान सहित विभिन्न देशों में उनके नवनिर्माण और विकास में योगदान दे सकने वाली विदेशी प्रतिभावान नई पीढ़ी को प्राथमिकता दिए जाने के साफ संकेत हैं।

17 मई को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने योग्यता आधारित एवं अंक आधारित जो नई आव्रजन

जयंतीलाल भंडारी

नीति (इमिग्रेशन पॉलिसी) पेश की है, उसके तहत मौजूदा ग्रीन कार्ड की जगह 'बिल्ड अमेरिका' वीजा लाने का प्रस्ताव रखा गया है। इससे उन हजारों भारतीय पेशेवरों और दक्ष कर्मियों को लाभ होने की उम्मीद है, जो औसतन करीब एक दशक से अधिक समय से ग्रीन कार्ड के लिए इंतजार कर रहे हैं। इसी तरह जापान के प्रसिद्ध उद्यमी हिरोयुकी तायकुची सान ने कहा कि जापान की औद्योगिक और कारोबार आवश्यकताओं में तकनीक और नवाचार का इस्तेमाल तेज होने की वजह से जापान में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के साथ ही कई अन्य क्षेत्रों में मसलन हेल्थकेयर, कृषि, अनुसंधान और विकास, सेवा व वित्त आदि क्षेत्र में कौशल प्रशिक्षित कार्यबल की भारी कमी अनुभव की जा रही है। खासतौर से बुजुर्ग होती जनसंख्या और जन्म दर गिरने की वजह से जापान में पेशेवरों की सबसे अधिक जरूरत है। चूंकि जापान में विभिन्न सांस्कृतिक व कारोबारी संबंधों के कारण अन्य विदेशियों की तुलना में भारतीयों को अधिक सम्मान दिया जाता है, इसलिए वहां भारतीय पेशेवरों के लिए रोजगार की अच्छी संभावनाएं हैं। जापान विदेश व्यापार संगठन (जेईटीआरओ) ने वर्ष 2020 तक दो लाख भारतीय पेशेवरों की पूर्ति के लिए कार्ययोजना बनाई है। वहीं जापान के निजी क्षेत्र ने तीन लाख भारतीय पेशेवरों की जरूरत प्रस्तुत की है। ऐसे में दो साल में पांच लाख भारतीय पेशेवर जापान में अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकेंगे। दुनिया के ख्याति प्राप्त मानव संसाधन परामर्श संगठन कॉर्न फेरी और विश्व बैंक की रिपोर्टों में कहा गया है कि जहां दुनिया में 2030 तक कुशल कामगारों का संकट होगा, वहीं भारत के पास 24.5 करोड़ अतिरिक्त कुशल कामगार होंगे।

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) के कारण उच्च कौशल प्रशिक्षित भारत की नई पीढ़ी को देश और दुनिया में अच्छे मौके मिलने की संभावना रहेगी। विश्व बैंक की रोजगार रहित विकास नामक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में तेजी से रोजगार के दरवाजे पर दस्तक देने वाले युवाओं की संख्या को देखते हुए हर साल 81 लाख नई नौकरियां और नए रोजगार अवसर पैदा करने की जरूरत है।

खुली खिड़की

पर्यटकों के सर्वाधिक लोकप्रिय देश

यात्राएं हमारे जीवन का अहम हिस्सा हैं। दुनिया के विभिन्न देशों में पर्यटक आवाजाही करते हैं। 2018 में आई एक रिपोर्ट के मुताबिक पर्यटकों ने यात्रा के लिए फ्रांस को ज्यादा तवज्जो दी है।

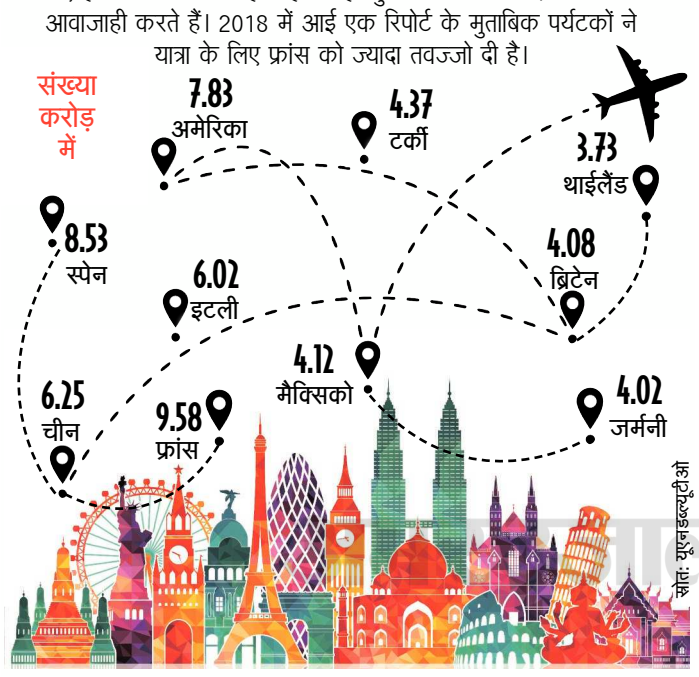

पुण्य क्षीण हो गए

सत्संग

राजा भुवनेश्वर ने अनेक अश्वमेध और वाजपेय यज्ञ कराए थे। उन्हें अहंकार हो गया कि पृथ्वी पर उनसे बड़ा धर्मात्मा और कोई नहीं है। उन्होंने राज्य में घोषणा करा दी कि यज्ञ होम करके ही पूजा उपासना की जा सकती है। जो इस आज्ञा का पालन नहीं करेगा, उसे दंड दिया जाएगा। राज्य में हरिमित्र नामक एक भक्त रहते थे। एक दिन नदी के तट पर जब वह वीणा पर संकीर्तन कर रहे थे, तो राजा के दूत ने उन्हें देख लिया। उसने राजा से शिकायत कर दी कि एक ब्राह्मण यज्ञ होम करने की जगह मूर्ति के सामने नाच-गाकर भगवान को रिझाने का प्रयास कर रहा है। अहंकार में डूबे राजा ने हरिमित्र को पकड़कर दरबार में बुलवाया और पूछा, तुम वेदों के अनुसार यज्ञ-हवन न करके मनमाने ढंग से कीर्तन करके पूजा क्यों कर रहे हो? हरिमित्र का उत्तर था, राजन, मैं वेदशास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को नहीं समझ सकता। भगवान की मूर्ति के सामने नाच-गाकर उनके नाम का उच्चारण करने से मुझे परम शांति मिलती है। राजा ने उन्हें राज्य से निकल जाने का आदेश दिया। कुछ दिनों बाद राजा की मृत्यु हो गई। यमराज ने उन्हें उल्लू की योनि में भेजने का आदेश दिया। राजा ने सकपकाकर धर्मराज से पूछा, मैंने जीवन में असंख्य अश्वमेध यज्ञ किए हैं। प्रजा को धर्मशास्त्रों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। ऐसा फिर भला कौन-सा पाप है, जो मुझे उल्लू योनि में भेज रहा है? धर्मराज ने राजा को हरिमित्र वाली घटना की याद दिलाते हुए बताया, अहंकार और मनमाने व्यवहार के कारण ही तुम्हारे तमाम पुण्य क्षीण हो गए हैं।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

शैतान लड़का और आम का पेड़

एक शैतान लड़के की कहानी, जिसे उसी की भाषा में जवाब मिला।

परवेज भाई मलिहाबाद के जाने-माने व्यक्ति थे। उनके पास आम के कई बाग थे। वह हर पेड़ से बेहद प्रेम करते थे और उसकी देखभाल अपने परिवार की तरह करते थे। हर वर्ष की तरह इस बार भी आम बहुत अच्छे आए थे। उन्होंने अपने सभी कर्मचारियों को बुलावा भेज दिया था। समय आ गया था कि आम को पेटियों में भरकर बाजार ले जाया जाए। वह अपने कुछ सहयोगियों के साथ बाग का जायजा लेने निकले ही थे कि एक पेड़ पर उन्हें एक शैतान लड़का आम तोड़ते हुए दिखा। उसने आम खाने के लिए आसपास की सारी शाखाएं खराब कर दी थीं या तोड़ दी थीं। पेड़ों को काफी नुकसान पहुंच रहा था। परवेज भाई और उनके सहयोगियों ने नीचे से उसे काफी आवाजें लगाईं और चेतावनी भी दीं। लड़का परवेज भाई से बोला, यह जमीन जरूर आपकी होगी, लेकिन यह संसार और यह प्रकृति आपकी नहीं है। आपको मुझे रोकने का कोई हक नहीं है। परवेज भाई सोचने लगे, क्या मैं इतना बुरा हूं? क्या मैं प्रकृति के नियमों को तोड़ रहा हूं? वह उस वक्त तो वहां से चले गए। थोड़ी देर बाद वह फिर लौटे, तो देखा कि वह लड़का अब भी मजे से आम खा रहा है। उन्होंने वहीं लड़के की पिटाई शुरू कर दी। लड़का बोला, आपको शर्म नहीं आती एक बेसहारा लड़के को मारते हुए? परवेज भाई बोले, मैं भी प्रकृति का हिस्सा हूं, मेरे हाथ में जो लकड़ी है, यह भी और तुम भी प्रकृति का हिस्सा हो। मैं तो बस वही कर रहा हूं, जो प्रकृति के प्रति मेरा कर्तव्य है। लड़के ने कहा, मुझसे गलती हो गई। मुझे माफ कर दीजिए। परवेज भाई बोले, यह तुमने सही कहा कि प्रकृति हम सबके लिए समान है। हम सबका प्रकृति पर बराबर का हक है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम इस बात का गलत फायदा उठाएं।

प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने का हमें कोई हक नहीं।

https://t.me/SSC4Exams